सं की. कि./एफ व्ही ०/69-87/8485 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० विकटर कैवला लिं०, 14/1, मयुरा शेड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री रामरूप सिंह; पुत्र श्री भीमल सिंह, मार्फत लेलित पान भण्डार सराय स्त्राजा लयू सार्किट, फरीदाबाद तथा उसके प्रवत्यकों के मध्य इसमें इस के बाद विलिखत मामले को कोई भौदोगिक विवाद है;

मीर चूंकि हरियाणा के 'राज्यपाल 'इस विवाद को न्यायनिर्णय हैतुं निविष्ट करना वांछमीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, भौद्योगिक विवाद ग्रंधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गुँई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415—3श्रम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रंधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रंधिनयम की धारा 7 के ग्रंधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे भुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री रामरूप सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस शहत का हकदार है?

सं०. भी. विं/एफ० ही०/15-87/8492.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० किस्टींक रिसन्ज (इण्डिया) प्रा० लि०, 19/6, मयुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री एस. पी त्यागी, पुत्र श्री गोविन्द राम म० न० 1866, सैक्टर, 29 फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

मीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायंनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझसे ^उहै ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3 श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-5 // 11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायंनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निर्दिश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

ं "म्बया "श्री ।एस. पी. त्यागी की 'सेवाओं का समापन न्यायोज्यित 'तया कीक 'है '? व्यदि नहीं, म्ती वह निसाराहत का हकदार है ?

म्सं औं विव /एफ डी | 66-81 | 8499 - चूँकि हरियाणा के राज्यपालकी राम है कि मैं एस एस मेंटल फिनिशर, 1/13, डी एल एफ मयुरा रोड़, फरीदाबाद, के अमिक श्री हरि हर प्रसाद, मार्फताहिन्द मजदूर सभा, 29, शहीद चौक नीसमें , फरीदाबाद तथा ससके अमन्द्रकों के मध्य इस में इस के बाद जिल्लित नामले में कोई औदोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिवित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का मसीग करते हुमें)हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीद्यसूचना सं० :5415—3—श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ अपूर्त हुए ग्रीप्रसूचना सं० :11495-जी०-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरदरी, -1958, द्वारा-उक्त अधिसूचना की धारा 7 के ग्राधीन गठित श्रम-ज्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त था उससे सुसंगत या उससे संग्वंत्यत नीचे निष्ठा नामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद सीन मध्य में देने हुत् निद्यद करते नहें अभीकि उक्त अप्रवस्तकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त नामला है या विवादग्रस्त सम्बन्धित सम्

क्या श्री हिर हर प्रसाद की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का